

देश का सबसे लंबा रेस्क्यू ऑपरेशन बना सलिक्यारा

चर्चा में क्यों?

28 नवंबर, 2023 को उत्तरकाशी ज़िले के सलिक्यारा में नरिमाणाधीन सुरंग में भू-धंसाव से फँसे 41 मज़दूरों को 17 दिनों की कड़ी मशक़त के बाद सफलतापूर्वक बाहर निकाल लिया गया। इसके साथ ही ऑपरेशन सलिक्यारा कर्सी सुरंग या खदान में फँसे मज़दूरों को निकालने वाला देश का सबसे लंबा रेस्क्यू ऑपरेशन बन गया है।

प्रमुख बटु

- वदिति हो की 12 नवंबर को दीपावाली के दिन उत्तरकाशी ज़िले के सलिक्यारा में नरिमाणाधीन सुरंग में भू-धंसाव से 41 मज़दूर अंदर फँस गए थे। उन्हें सुरकषति बाहर निकालने के लिये वभिन्न एजेंसियाँ जुटी थीं।
- मशिन सलिक्यारा में बचाव कार्य में एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, बीआरओ, आरवीएनएल, एसजेवीएनएल, ओएनजीसी, आईटीबीपी, एनएचएआईडीसीएल, टीएचडीसी, उत्तराखंड राज्य शासन, ज़िला प्रशासन, थल सेना, वायुसेना, शर्मकियों की अहम भूमिका रही।
- उल्लेखनीय है की 17 दिनों तक चला ऑपरेशन सलिक्यारा कर्सी सुरंग या खदान में फँसे मज़दूरों को निकालने वाला देश का सबसे लंबा रेस्क्यू ऑपरेशन बन गया है। इससे पहले भी देश में इस तरह के अभियानों को अंजाम दिया जा चुका है।
- रानीगंज कोयला खदान अभियान-
 - 13 नवंबर, 1989 को पश्चिम बंगाल के महाबीर कोल्यारी रानीगंज कोयला खदान जलमग्न हो गई थी। इसमें 65 मज़दूर फँस गए थे। इनको सुरकषति बाहर निकालने के लिये खनन इंजीनियर जसवंत गलि के नेतृत्व में टीम बनाई गई। दो दिनों के ऑपरेशन के बाद आखरिकार सभी मज़दूरों को सुरकषति बाहर निकाल लिया गया।
 - उस अभियान में गलि लोगों को बचाने के लिये खुद एक स्टील कैप्सूल के माध्यम से खदान के भीतर गए थे। 1991 में तत्कालीन राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन ने उन्हें सर्वोत्तम जीवन रकषा पदक से नवाजा था।
 - उस अभियान में मज़दूरों की संख्या सलिक्यारा से ज्यादा थी, लेकिन उन्हें निकालने में समय कम लगा था। सलिक्यारा में 13वाँ दिनों बीतने के बाद मज़दूर बाहर निकाले जा सके।
- कुछ ऐसा ही एक अभियान वर्ष 2006 में हरियाणा के कुरुक्षेत्र के हल्देरी गाँव में हुआ था, जहाँ एक पाँच साल का बच्चा प्रसि बोरवेल में गरि गया था। करीब 50 घंटे की कड़ी जद्दोजहद के बाद बचाव दलों ने बच्चे को बाहर निकालने में कामयाबी पाई थी। इस अभियान में बराबर के ही अन्य बोरवेल को तीन फीट व्यास के लोहे के पाइप के माध्यम से जोड़कर बच्चे को बाहर निकाला गया था।
- कुछ ऐसे ही अभियान वदियों में भी हुए हैं-
 - थाई गुफा अभियान:** 23 जून, 2018 को थाईलैंड की थाम लुआंग गुफा में गई वाइल्ड बोअर्स फुटबॉल टीम बारशि के कारण हुए जलभराव की वजह से भीतर फँस गई। गुफा में लगातार बढ़ रहे पानी के बीच खलाइयों को खोजना बेहद चुनौतीपूर्ण काम था। करीब दो सप्ताह तक चले अभियान में 90 गोताखोर भी लगाए गए। इस बचाव अभियान में पूर्व थाईलैंड के नेवी सील समन कुनान को जान गवानी पड़ी। यह दुनिया के सबसे जटिल रेस्क्यू अभियानों में से एक माना जाता है।
 - चीली खदान अभियान:** 5 अगस्त, 2010 को सैन जोस सोने और तांबे की खदान के ढहने से 33 मज़दूर उसमें दब गए थे। ज़मीन के ऊपर से करीब 2000 फीट नीचे फँसे इन मज़दूरों से संपर्क करना ही मुश्किल था। 17 दिनों की मेहनत के बाद सतह के नीचे एक लाइफलाइन छेद बनाकर फँसे मज़दूरों को भोजन, पानी, दवा भेजी जा सकी। 69 दिनों के बाद 13 अक्टूबर को सभी मज़दूरों को एक-एक करके सुरंग से बाहर निकाला गया।
 - क्यूक्रीक माइनर्स अभियान:** 24 जुलाई, 2002 को अमेरिका के पेंसिल्वेनिया के समरसेट काउंटी की क्यूक्रीक माइनिंग इंक खदान में 9 मज़दूर फँस गए। इन्हें केवल 22 इंच चौड़ी आयरन रिंग के सहारे 77 घंटे बाद बाहर निकाला जा सका था।





PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/silkyara-became-the-country-s-longest-rescue-operation>